Hazrate Bayazeed Bistami رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 426
Weekly Booklet : 426

हज़रते बायज़ीद बिस्तामी रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

(सफ़्हात : 17)

अब तुम कामिल हो चुके 07

सफ़रे हज का निराला अन्दाज़ 10

30 साल से मुख़्लिस दिल की तलब 12

गुनाह की याद से पसीना 15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه

दुआए अत्तार ! या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه" पढ़ या सुन ले उसे हमेशा अपने नेक बन्दों से महब्बत करने वाला बना और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत बेहिसाब बख़्श दे।

اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰلهٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरवरे ज़ीशान, रहमते आलमियान صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر، ص87، حدیث:1406)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهِم का ज़िक्रे ख़ैर नुज़ूले रहमत का बाइस होता है और उस से ईमान को ताज़गी, हरारत और बालीदगी (यानी बढ़ौतरी) नसीब होती है नीज़ मालूमात का बेबहा ख़ज़ाना भी हाथ आता है, अलग़रज़ औलियाए किराम رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهِم की ज़िन्दगी का हर पहलू अपने अन्दर इस्लाह के हज़ारों मदनी फूल लिये हुए होता है। आइये ! **अल्लाह** पाक के एक वली हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه की ज़िन्दगी के चन्द मुख़्तसर वाक़िआत पढ़िये।

मादरज़ाद वली

हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه मादरज़ाद वली थे, आप की विलायत की अलामत उसी वक़्त से ज़ाहिर होना शुरूअ हो गई थीं कि जब

आप अपनी वालिदए माजिदा के पेट में थे चुनान्चे आप की वालिदए माजिदा फ़रमाती हैं : जिस वक़्त "बायज़ीद" मेरे पेट में थे अगर उन दिनों कोई मुश्तबह चीज़ (यानी जिस का ह़लाल व ह़राम होना मालूम न हो) मेरे पेट में चली जाती तो मुझे उस वक़्त तक बड़ी बेचैनी रहती जब तक कि मैं अपने ह़ल्क़ में उंगली डाल कर क़ै कर के उसे निकाल न देती। (تذکرۃ الاولیاء، 1/129)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! ह़राम तो दूर की बात है औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم मुश्तबह चीज़ों से भी बचते थे जब कि आज कल सूरते ह़ाल इस क़दर नाज़ुक है कि जिस चीज़ का ह़राम होना यक़ीनी होता है उस की भी कोई परवा नहीं की जाती और उसे भी खा लिया जाता है जैसा कि बाज़ लोग सूदी कारोबार कर के, रिशवत ले कर, माप तोल में डन्डी मार कर और कारोबार में झूट बोल कर ह़राम कमाते और ख़ाते हैं। यूंही बहुत से लोग दौराने मुलाज़मत ड्यूटी पूरी नहीं करते लेकिन तन्ख़्वाह पूरी लेते हैं और उसे बग़ैर डकार लिये हज़्म कर जाते हैं और उन्हें इस बात का एह़सास भी नहीं होता क्यूंकि उन के ज़मीर मुर्दा हो चुके होते हैं।

वालिदा की ख़िदमत

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी वालिदए माजिदा के बहुत ज़ियादा फ़रमां बरदार थे उस की बरकत से **अल्लाह** पाक ने उन्हें बड़ा बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया था चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने बारे में ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे **अल्लाह** पाक ने जो इतनी अ़ज़मतो शान अ़ता फ़रमाई है उस की वज्ह येह है कि मैं ने अपनी वालिदा की बहुत ख़िदमत की है।

(تذکرۃ الاولیاء، 1/132 ماخوذاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी वालिदा के इतने फ़रमां बरदार थे कि इस की मिसाल बहुत कम मिलती है, इस बारे में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक वाक़िआ पेशे ख़िदमत है।

पानी ले कर सारी रात खड़े रहे

सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार सर्दियों की सख़्त रात में मेरी मां ने मुझे पानी लाने का हुक्म दिया, जब मैं ग्लास में पानी ले कर आया तो मेरी वालिदा की आंख लग चुकी थी, मैं पानी लिये अपनी वालिदा के सिरहाने खड़ा रहा यहां तक कि सख़्त सर्दी की वज्ह से पानी ग्लास में बर्फ़ बन गया, जब मां उठी तो मां की मम्ता जोश में आई और पूछा : बेटा ! क्या तुम पानी लिये सारी रात खड़े रहे ? मैं ने अर्ज़ की : जी हां। आप ने पानी त़लब किया था और जब मैं पानी ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप सो चुकी थीं और अदब इस बात की इजाज़त नहीं देता था कि मैं आप को नींद से जगाऊं और कहीं ऐसा न हो कि आप नींद से बेदार हों और पानी मौजूद न होने के सबब प्यास की तक्लीफ़ में मुब्तला हों लिहाज़ा पानी लिये खड़ा रहा। (تذکرۃ الاولیاء، 1/132 ماخوذاً)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! यक़ीन जानिये ! वालिदैन की इत़ाअत के जज़्बे से सरशार सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इन वाक़िआत में हमारे लिये बड़ा दर्स है। एक त़रफ़ तो सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे कि जिन्हों ने अपनी मां का इस क़दर ख़याल रखा कि बुलन्द दरजात पाए जब कि दूसरी त़रफ़ हम जैसे निकम्मे लोग हैं कि जिन का ज़ाहिर पारसाई का एलान कर रहा होता है और ज़ाहिर में बड़े नेक सूरत और आशिक़े रसूल नज़र आ रहे होते हैं मगर ह़ालत येह होती है कि अगर मां बेचारी कोई बात कर दे तो अव्वलन सुनते ही नहीं और अगर सुनते हैं तो एक दम डांट या झिड़क कर जवाब देते हैं, नीज़ अगर मां की कोई बात समझ में न आए तो एक दम झाड़ कर इस त़रह़ के जुम्ले बोलने लगते हैं : "मेरे पास टाइम नहीं है, मैं सो रहा हूं, क्या दिमाग़ खा रखा है वग़ैरा वग़ैरा।" ग़ौर कीजिये ! जब हमारा अपनी वालिदा से गुफ़्तगू करने का अन्दाज़ ऐसा होगा तो फिर हमारा दिल

इबादत में कैसे लग पाएगा ? हमारी गुनाहों की आदत कैसे ख़त्म होगी ? हमारा ज़मीर कैसे बेदार होगा ? इबादात में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ किस त़रह़ पैदा होगा ? अफ़्सोस ! न जाने दिन में कितनी बार हम मां बाप को झाड़ते हैं ! अगर कोई इस लिये मां बाप को झाड़ता है कि वोह नमाज़ नहीं पढ़ते तो उस की भी इजाज़त नहीं क्यूंकि येह उन का और उन के रब का मुआमला है। हमारे लिये हुक्म येह है कि मां बाप शरीअत के दाइरे में रहते हुए जो भी हुक्म दें हम उन की इत़ाअत करें अलबत्ता अगर मां बाप शरीअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने को कहें तो इस सूरत में उन की इत़ाअत नहीं की जाएगी। यक़ीनन ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जिन के मां बाप उन से राज़ी हो कर दुन्या से रुख़्सत होते हैं।

ख़ुश नसीब लोग

अमीरे अहले सुन्नत, मौलाना मुहम्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मां बाप की फ़रमांबरदारी के ह़वाले से मेरा दिल बहुत ज़ियादा मुत़मइन है और वोह इस त़रह़ कि मैं ने बाप का साया देखा ही नहीं ! ग़ालिबन अभी मेरी उम्र डेढ़ या दो साल थी कि वालिद साह़िब इन्तिक़ाल फ़रमा गए तो यूं मुझे वालिद साह़िब से बात चीत करने का मौक़अ ही नहीं मिला उन्हें नाराज़ करना तो दूर की बात है। मेरी वालिदा ह़यात थीं اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! वोह दुन्या से इस ह़ाल में रुख़्सत हुईं कि वोह मुझ से ख़ुश थीं। कोई बईद नहीं कि आज जो बहुत से लोगों की तवज्जोह मेरी त़रफ़ मब्ज़ूल है येह मेरी वालिदा के मुझ से ख़ुश होने की बरकत से हो।

मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल जुमेरात को हुवा था लेकिन उस से कुछ दिन पहले इतवार को उन्हें दिल का एक दौरा पड़ा था, जिसे घर के अफ़राद न समझ पाए मगर मुझे शक पड़ गया था कि हार्ट अटैक हुवा है चुनान्चे मैं ने घर वालों को जमा कर के इज्तिमाई त़ौर पर तौबा करवाई और यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरी वालिदा ने भी तौबा

की और कलिमा शरीफ़ पढ़ा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरी वालिदा को ईमान का इतना एहसास था कि अगर किसी के मुंह से कोई नाज़ेबा जुम्ला निकल जाता तो सब घर वालों से बोलतीं कि तौबा करो और कलिमा पढ़ो यहां तक कि कभी कभी मुझ से पूछतीं कि मेरे मुंह से फ़ुलां जुम्ला निकल गया, कहीं कुफ़्र तो नहीं ?

आख़िरी दिन जुमेरात को सफ़र शरीफ़ की सतरहवीं रात थी और मैं एक इज्तिमाअ में शरीक था, इतने में मुझे घर से बुलावा आया कि जल्दी घर आ जाओ, जब मैं घर पहुंचा तो मेरी वालिदा की ज़बान बन्द हो चुकी थी और वोह सकरात के आलम में थीं, फिर हम ने यासीन शरीफ़ की तिलावत की तो उस दौरान तक़रीबन 10:15 बजे उन की रूह़ बा आसानी क़ब्ज़ हो गई। बाद में मुझे मेरी बड़ी बहन ने बताया कि वालिदा की ज़बान कलिमा शरीफ़ पढ़ते और इस्तिग़फ़ार करते हुए बन्द हुई थी, वोह तुम्हें बहुत याद कर रही थीं और बार बार कह रही थीं कि मेरे लाल को जल्दी बुलाओ कहीं वोह मुझ से दूर न रह जाए, इन्तिक़ाल वाले दिन इशा से पहले मैं ने अपनी वालिदा के साथ खाना खाया और जब मैं नमाज़ की अदाएगी के लिये रुख़्सत होने लगा तो मेरी वालिदा मुझ से कहने लगीं : क़रीब आओ मैं तुम्हारे हाथ चूमूंगी, मैं ने अर्ज़ की : आप मेरे नहीं बल्कि मैं आप के हाथ चूमूंगा। बहरहाल मेरी वालिदा इस ह़ाल में दुन्या से रुख़्सत हुईं कि मुझ से बहुत ख़ुश थीं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत बाज़ अवक़ात इन्सान से मां बाप की नाफ़रमानी हो जाती है लिहाज़ा शबे बराअत, रमज़ान शरीफ़ की आमद और दीगर छोटे बड़े दिनों में वक़्तन फ़वक़्तन पांव पकड़ कर, हाथ जोड़ कर वालिदैन बल्कि हो सके तो सारे घर वालों से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लेनी चाहिये। जहां तक मुम्किन हो मां बाप को ख़ुश रखिये, अगर मां बाप पैसे त़लब करें तो बढ़ा कर पेश कीजिये मसलन एक मांगें तो पांच और 10 मांगें तो 50 दीजिये और इस त़रह़ मां बाप की ख़िदमत कर के उन की दुआएं लीजिये اِنْ شَآءَالله दोनों जहां में बेड़ा

पार होगा। बस इस बात का ख़याल रखिये कि अगर वालिदैन शरीअत के ख़िलाफ़ कोई हुक्म दें तो उसे मत मानिये मसलन मां बाप दाढ़ी मुन्डाने को कहें तो न मुन्डाइये अगर मुन्डाएंगे तो गुनाहगार होंगे। याद रखिये ! जिस मुआमले में **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म मौजूद हो उस के ख़िलाफ़ ख़्वाह मां बाप हों या कोई और, किसी की इत़ाअत जाइज़ नहीं।

एक साथ दो हस्तियों का ह़क़ अदा नहीं हो सकता

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ अपनी वालिदा की ख़ूब ख़िदमत करते और उन से दुआएं लेते थे, एक बार आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ मकतब (यानी मद्रसे) में सूरए लुक़्मान की तिलावत कर रहे थे, जब इस आयते मुबारका पर पहुंचे ﴿اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का।" (پ21، لقمٰن:14) तो अपनी वालिदा के पास ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : मुझ से एक साथ दो हस्तियों (यानी आप और **अल्लाह** पाक) का ह़क़ अदा नहीं हो सकता लिहाज़ा या तो आप मुझे **अल्लाह** पाक से मांग लीजिये ताकि मैं आप की ख़िदमत करता रहूं या फिर अपने सारे हुक़ूक़ मुआफ़ कर के मुझे **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर दीजिये ताकि मैं उस का शुक्र अदा करूं। चूंकि आप की वालिदा बड़ी पारसा और नेक ख़ातून थीं चुनान्चे उन्हों ने कहा : बेटा ! मैं अपने तमाम हुक़ूक़ से दस्तबरदार हो कर तुम्हें **अल्लाह** पाक के सिपुर्द करती हूं। इस के बाद सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए और वहां जा कर **अल्लाह** पाक की इबादत में मश्ग़ूल हो गए। आप तीन साल तक सह़राओं में मुजाहदात करते रहे और इस दौरान यादे इलाही का इस क़दर ग़ल्बा था कि खाना भी नहीं खाते थे। याद रखिये ! ऐसों को रूह़ानी ग़िज़ा अ़त़ा की जाती है यानी **अल्लाह** पाक ग़ैब से ऐसी क़ुव्वतें अ़त़ा फ़रमा देता है कि खाने पीने की ह़ाजत नहीं रहती।

अब तुम कामिल हो चुके

सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कई औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की ज़ियारतें कीं और उन की सोह़बत में रह कर खूब फ़ैज़ ह़ासिल किया। उन्ही हस्तियों में से एक हस्ती ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की भी है। सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक मुद्दत तक सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में रहे। एक मरतबा सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ बायज़ीद ! फ़ुलां त़ाक़ में जो किताब रखी है उसे उठा लाओ। अर्ज़ की : हु़ज़ूर ! वोह त़ाक़ किस जगह है ? सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : तुम इतने अर्से से मेरे पास हो मगर अभी तक तुम्हें येह मालूम नहीं हो सका कि त़ाक़ कहां है ? अर्ज़ की : हु़ज़ूर ! त़ाक़ तो कुजा, मैं ने तो आप की सोह़बत में रहते हुए कभी सर उठा कर भी नहीं देखा, येह सुन कर सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत ख़ुश हुए और इरशाद फ़रमाया : अब तुम कामिल हो चुके हो, बिस्त़ाम वापस चले जाओ। (تذکرۃ الاولیاء، 1/130 ملتقطاً)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! जब बन्दा अपने बुज़ुर्गों, उस्तादों या मशाइख़ की सोह़बत पाए तो इधर उधर सर घुमाने, किसी को छेड़ने और किसी के बारे में पूछ गछ करने के बजाए सर झुका कर बाअदब बैठा रहे और अपने आप को ख़ाली प्याला तसव्वुर करे क्यूंकि जो बरतन ख़ाली होता है उस में कुछ भरा जाता है और जो पहले से ही भरा हुवा हो उस में मज़ीद कुछ नहीं भरा जा सकता। बाज़ अवक़ात लोग उलमा या मशाइख़ के पास जाते हैं तो उन से त़रह़ त़रह़ के सुवालात कर के उन का इम्तिह़ान लेने लग जाते हैं जब कि उन्हें येह मालूम नहीं होता कि उन का अपना इम्तिह़ान लिया जा रहा है। याद रखिये ! अगर अक़ीदत कामिल हो तो फ़ैज़ ज़रूर मिलता है और किस त़रह़ मिलता है ? इस का अन्दाज़ा इस ह़िकायत से लगाइये, चुनान्चे

माज़ूर बच्चा चलने फिरने लगा

डाकूओं की एक जमाअत लूट मार के लिये निकली, इसी दौरान उन्हों ने रात एक मुसाफ़िर ख़ाना में क़ियाम किया और वहां येह ज़ाहिर किया कि हम लोग राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर हैं। मुसाफ़िर ख़ाने का मालिक नेक आदमी था उस ने रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से उन की ख़ूब ख़िदमत की, सुब्ह़ वोह डाकू किसी त़रफ़ रवाना हो गए और लूट मार कर के शाम को वापस वहीं आ गए। गुज़श्ता शब मुसाफ़िर ख़ाने वाले के जिस लड़के को चलने फिरने से माज़ूर देखा था वोह आज बिला तकल्लुफ़ चल फिर रहा था ! उन्हों ने तअज्जुब के साथ मुसाफ़िर ख़ाने वाले से पूछा : क्या येह वोही कल वाला माज़ूर लड़का नहीं ? उस ने बड़े एह़तिराम से जवाब दिया : जी हां, येह वोही है। पूछा : येह कैसे सेह़तयाब हुवा ? जवाब दिया : येह सब आप जैसे राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों की बरकत है, बात येह है कि आप लोगों ने जो खाया था उस में से कुछ बच रहा था, हम ने आप ह़ज़रात का जूठा खाना ब निय्यते शिफ़ा अपने माज़ूर बच्चे को खिलाया और जूठे पानी से उस के बदन पर मालिश की, **अल्लाह** पाक ने आप जैसे नेक बन्दों के जूठे खाने और पानी की बरकत से हमारे माज़ूर बच्चे को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई। जब डाकूओं ने येह सुना तो उन की आंखों से आंसू जारी हो गए, उन्हों ने रोते हुए कहा : येह सब आप के ह़ुस्ने ज़न का नतीजा है वरना हम तो सख़्त गुनहगार लोग हैं, सुनो ! हम राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर नहीं बल्कि डाकू हैं, **अल्लाह** पाक की इस करम नवाज़ी ने हमारे दिलों की दुन्या ज़ेरो ज़बर कर दी, हम आप को गवाह बना कर तौबा करते हैं चुनान्चे उन लोगों ने ताइब हो कर नेकी का रास्ता लिया और मरते दम तक तौबा पर साबित क़दम रहे। (قلیوبی، ص20ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! डाकूओं के जूठे से माज़ूर बच्चा ठीक हो गया, येह मुसाफ़िर ख़ाने के मालिक की सच्ची अ़क़ीदत का नतीजा

था कि उस ने डाकूओं को राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर समझ कर उन की ख़िदमत की वरना ह़क़ीक़त में वोह डाकू थे। याद रखिये ! बात सारी अक़्दीत की है, अगर हम किसी चीज़ को अक़ीदत की नज़र से देखेंगे तो हमें कुछ और नज़र आएगा और उसी चीज़ को अगर तन्क़ीद की नज़र से देखेंगे तो कुछ और नज़र आएगा। अगर हम किसी शख़्स के पास महब्बत व अक़ीदत से ह़ाज़िर होंगे तो हमें उस के पसीने से भी ख़ुश्बू आएगी और अगर तन्क़ीद की निय्यत से जाएंगे तो उस की ख़ुश्बू से भी बदबू आएगी।

क़िब्ले की त़रफ़ थूकने वाले की ह़िकायत

सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अदब का बहुत ज़ियादा लिह़ाज़ रखते थे यहां तक कि अगर किसी को ख़िलाफ़े अदब कोई काम करता देखते तो उस की सोह़बत इख़्तियार करने से बचते थे चुनान्चे एक मरतबा सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए जिन का आप ने बड़ा शोहरा सुन रखा था, इत्तिफ़ाक़न उस बुज़ुर्ग ने क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के थूक दिया तो आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ वहां से वापस तशरीफ ले आए और इरशाद फ़रमाया : येह शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आदाब में से एक अदब पर तो अमीन है नहीं तो फिर जिस चीज़ (यानी विलायत) का दावा करता है उस पर क्या अमीन होगा ? (رسالہ قشیریہ، ص38ملتقطاً)

रास्ते में नहीं थूकते थे

सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के अदब का येह ह़ाल था कि जब नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ जाते तो इस लिये रास्ते में नहीं थूकते थे कि अब मैं **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश होने जा रहा हूं। (تذکرۃ الاولیاء، 1/130ملتقطاً)

ग़ौर कीजिये ! हमारी ह़ालत येह है कि हम बग़ैर सोचे समझे जिस जगह चाहते हैं वहीं थूक देते हैं यहां तक कि बाज़ लोग मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़

की गलियों में भी थूकते और नाक साफ़ करते हुए आसरा नहीं करते ह़ालांकि येह वोह मुबारक गलियां हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दमों को चूमने की सआदत ह़ासिल है। हां ! जिन अफ़्आल में आदमी मजबूर हो तो वोह अलग बात है मसलन त़बई ह़ाजत जैसे मुआमले में आदमी लाचार है लेकिन गलियों और सड़कों पर थूकने के मुआमले में तो लाचार नहीं। याद रखिये ! गलियों और सड़कों पर थूकना वैसे भी अदब के ख़िलाफ़ है और मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा जैसे मुक़द्दस शहरों में तो बहुत ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है। अलग़रज़ हम जितना अदब करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ उतना नफ़ा पाएंगे।

"बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब"

बहरह़ाल जब तक बन्दा शरीअत पर अमल नहीं करता तब तक त़रीक़त में कोई मक़ाम ह़ासिल नहीं कर पाता। इस दौर में बाज़ लोग नमाज़ें क़ज़ा करते और दाढ़ी मुन्डाते या ख़शख़शी रखते हैं मगर इस के बावुजूद ख़ुद को साह़िबे त़रीक़त कहलवाते और बढ़ चढ़ कर त़रीक़त के बुलन्दो बांग दावे करते हैं। अवामुन्नास के इल्मे दीन से दूर होने के सबब आज कल बहुत से लोग त़रीक़त के नाम पर अपनी अपनी दुकानें चला रहे हैं।

सफ़रे ह़ज का निराला अन्दाज़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब हम लोग ह़ज के लिये जाते हैं तो अपने घर पर ह़ज मुबारक का बोर्ड लगवाते और बड़ी शानो शौकत के साथ एह़राम बांध कर एयरपोर्ट पर तसवीरें खिंचवाते हैं लेकिन सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के सफ़रे ह़ज का अन्दाज़ बड़ा निराला था चुनान्चे आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ दौराने सफ़र हर चन्द क़दम पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते और इरशाद फ़रमाते : चूंकि मैं बहुत बड़े बादशाह के दरबार की त़रफ़ जा रहा हूं इस लिये मुझे इसी अन्दाज़ से जाना

चाहिये। इस निराले अन्दाज़ से ह़ज का सफ़र त़ै करने में आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को मक्कए मुकर्रमा पहुंचने तक 12 साल का अर्सा लगा। (تذکرۃ الاولیاء، 1/130 ملتقطاً)

सामान ऊंट पर है या किसी और चीज़ पर ?

(ह़ज करने के बाद) दूसरे साल ह़ज़रते बायज़ीद رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने मदीना शरीफ़ का क़स्द फ़रमाया, जब आप मदीना शरीफ़ की ह़ाज़िरी के लिये रवाना हुए तो सैंकड़ों अफ़राद आप के साथ हो लिये, चूंकि आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه तन्हाई पसन्द थे और अपने इर्द गिर्द लोगों का हुजूम होना पसन्द नहीं करते थे (क्यूंकि आम त़ौर पर लोग तारीफ़ें कर के ख़्वाह मख़्वाह आदमी को चढ़ा देते हैं और जो वोह इबादत करना चाहता है उसे नहीं करने देते) लिहाज़ा ऐसे लोगों से जान छुड़ाने के लिये सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने येह ह़र्बा इस्तिमाल किया कि एक ऊंट पर बहुत सारा बोझ लाद दिया जिस से लोगों को बड़ा तअज्जुब हुवा और वोह ह़ैरत से कहने लगे : आप ने इतना सारा बोझ एक बेज़बान जानवर पर लाद दिया ! आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : ज़रा ग़ौर से देखो ! सामान ऊंट पर है या किसी और चीज़ पर ? जब लोगों ने ग़ौर से देखा तो पता चला सामान ऊंट पर नहीं बल्कि फ़ज़ा में मुअल्लक़ (यानी लटका हुवा) है। येह मन्ज़र देख कर लोगों की ह़ैरत से आंखें फटी की फटी रह गईं, आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने उन से फ़रमाया : मैं ने तुम से ख़ुद को छुपाया तो तुम्हें मेरे बारे में येह बदगुमानी लाह़िक़ हुई कि मैं ने बेज़बान जानवर पर इतना सारा बोझ लाद दिया और अब जब ह़क़ीक़त दिखाता हूं तो तुम्हारे अन्दर इसे बरदाश्त करने का ह़ौसला नहीं, येह कह कर आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने उन सब से अपना पीछा छुड़ा लिया। (تذکرۃ الاولیاء، 1/131 ملتقطاً)

30 साल से मुख़्लिस दिल की त़लब

एक मरतबा एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! ख़ुलूसे दिल के साथ मुझ पर ऐसी निगाह डालिये कि मेरा काम बन जाए। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं 30 साल से **अल्लाह** पाक से मुख़्लिस दिल त़लब कर रहा हूं और उस की बारगाह में अ़र्ज़ किये जा रहा हूं कि ऐ **अल्लाह** ! मुझे ख़ुलूसे क़ल्ब अ़त़ा फ़रमा लेकिन अभी तक मैं ख़ुलूसे क़ल्ब पाने में कामयाब नहीं हो सका। लिहाज़ा जब मेरा अपना दिल इख़्लास से ख़ाली है तो तुम्हारे लिये इख़्लास की नज़र कहां से लाऊं ?

(تذکرۃ الاولیاء، 1/146ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले दौर के लोग अपने बुज़ुर्गों से कैसी अ़क़ीदत रखते थे कि अगर वोह ख़ुलूसे दिल के साथ एक नज़र डालें तो उन के काम बन जाएं, नीज़ उन बुज़ुर्गों की आजिज़ी व इन्किसार कैसा हुवा करता था कि जब उस शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से इख़्लास के साथ नज़र डालने का मुत़ालबा किया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने मुख़्लिस होने को तस्लीम ही नहीं किया और उस शख़्स को टाल दिया।

ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा

एक मरतबा सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे के सबब कपकपी त़ारी हुई, इस पर आप के एक मुरीद को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और उस ने अ़र्ज़ की : ख़ौफ़े ख़ुदा तो हमें भी ह़ासिल है मगर आप पर येह कैफ़िय्यत कैसे त़ारी हो गई ? इरशाद फ़रमाया : मुझे 30 साल की मेह़नत और रियाज़ते नफ़्स से जो मक़ाम ह़ासिल हुवा वोह मैं तुम्हें एक लम्हे में कैसे समझा सकता हूं ?

(تذکرۃ الاولیاء، 1/146ملتقطاً)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ! सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 30 साल तक रियाज़ते नफ़्स की फिर जा कर उन्हें एक मक़ाम हासिल हुवा जब कि हम येह चाहते हैं कि हमें एक दम ही सब कुछ हासिल हो जाए और एक दम ही सब कुछ सीख लें, बाज़ अवक़ात दावते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने वालों की येही ख़्वाहिश होती है कि वोह जल्द अज़ जल्द मुबल्लिग़ बन जाएं। देखिये ! बच्चा अभी बोलना सीखे और कहे कि मेरे हाथ में मैट्रिक की सनद आ जाए तो ऐसा मुम्किन नहीं बल्कि इस के लिये उसे दस साल तक मेहनत करना पड़ेगी तब जा कर मैट्रिक की सनद हासिल होगी।

इस्लामी फ़ौज की मदद

सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه विलायत के आला दर्जे पर फ़ाइज़, साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे, चुनान्चे एक मरतबा मुल्के रूम में मुसलमानों की कुफ़्फ़ार से जंग हुई तो इस्लामी फ़ौज पस्पा होने लगी, मुसलमानों की फ़ौज में शरीक एक फ़ौजी सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बड़ा मोतक़िद था, बेसाख़्ता उस की ज़बान से निकला : या शैख़ बायज़ीद ! इमदाद फ़रमाइये[1] उसी वक़्त एक ख़ौफ़नाक आग नुमूदार हुई, लश्करे कुफ़्फ़ार फ़रार होने लगा और मुसलमानों को फ़त्ह नसीब हुई। (تذکرۃ الاولیاء، 1/146 ملتقطاً)

पेशाब में ख़ून

ऐ आशिक़ाने औलिया ! जहां सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मदारिज बहुत आला हैं वहीं उन की नदामतें और रिक़्क़तें भी बड़ी मुतअस्सिर

1...अगर शैतान येह वस्वसा दिलाए कि मदद सिर्फ़ **अल्लाह** पाक ही कर सकता है, सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पुकारे जाने पर किस तरह किसी की मदद कर सकते हैं ? तो इस तरह के वस्वसों की काट के लिये 20 सफ़हात पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "जिन्नात का बादशाह" का मुतालआ कीजिये। (शोबा बयानाते अमीरे अहले सुन्नत)

कुन हैं चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक रात अपने घर की छत पर तशरीफ़ ले गए और दीवार पकड़ कर पूरी रात ख़ामोश खड़े रहे जिस की वज्ह से आप के पेशाब में ख़ून आने लगा। लोगों ने सबब दरयाफ़्त किया तो इरशाद फ़रमाया : इस की दो वज्हें हैं, पहली येह कि आज मैं **अल्लाह** पाक की इबादत से महरूम रहा क्यूंकि मुझ से रात में इबादत न हो सकी। दूसरी येह कि बचपन में मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया था चुनान्चे मैं उन दोनों चीज़ों से इस क़दर ख़ौफ़ ज़दा था कि मेरा दिल ख़ून हो गया और पेशाब के रास्ते ख़ून आने लगा। (تذکرۃ الاولیاء، 1/133 ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम रात भर ग़ाफ़िल हो कर सोए रहते हैं जब कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे अपनी रातें इबादत में गुज़ारते थे। सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दूसरी वज्ह येह बयान फ़रमाई कि बचपन में मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया था। याद रखिये ! नाबालिग़ का गुनाह क़ाबिले शुमार नहीं होता लेकिन उस के बावुजूद सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किस क़दर ख़ौफ़ज़दा थे कि पेशाब के रास्ते ख़ून आने लगा ! हम बालिग़, समझदार और उस चीज़ का शुऊर रखने के बावुजूद कि फ़ुलां काम गुनाह और **अल्लाह** पाक की नाफ़रमानी है खुले बन्दों (यानी बेधड़क) और अलल एलान करते हैं और किसी की मजाल नहीं कि हमें रोक टोक कर सके। हम नमाज़े फ़ज्र के वक़्त सोए रहते हैं और हमें इस बात का एहसास नहीं होता कि घर और महल्ले के अफ़राद को हमारे नमाज़ न पढ़ने का पता चल जाएगा। ज़ाहिर है जब **अल्लाह** पाक का डर न रहा तो किसी और से क्या डरना ? **अल्लाह** के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शर्म न रही तो किसी और से क्या शरमाना ? हमारी हालत इतनी अब्तर हो चुकी है कि हम खुले आम गुनाह करते, दोटोक गाली देते, ठीक ठाक झूट बोलते, वादा कर के क़स्दन

ख़िलाफ़वर्ज़ी करते और बिलानाग़ा दाढ़ी मुन्डाते हैं ह़ालांकि दाढ़ी मुन्डाना ह़राम है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : मूंछें पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो, यहूदियों जैसी शक्ल मत बनाओ। (مسلم، ص125، حدیث602-603ماخوذاً)

अफ़्सोस ! हमें इस बात से डर नहीं लगता और न ही शर्म आती है कि हम दाढ़ी मुन्डा कर **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसा चेहरा लिये फिरते हैं। नीज़ हमें इस बात का भी कुछ एह़सास नहीं होता कि हम मज़े से चटख़ारे ले कर सूद और रिशवत का माल खाते, खुले आम बन्दों मिलावट वाला काम करते और कारोबार में ख़ूब डन्डी मारते हैं ! एक त़रफ़ तो हमारी येह ह़ालते ज़ार है और दूसरी त़रफ़ **अल्लाह** पाक के वली ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को देखिये कि बचपन में होने वाले एक गुनाह को याद कर के इतना घबरा गए कि पेशाब के रास्ते ख़ून आने लगा ह़ालांकि नाबालिग़ी की ह़ालत में किया जाने वाला गुनाह क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं होता।

गुनाह की याद ने पसीने से शराबोर कर दिया

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ को जब कभी अपने साबिक़ा गुनाह याद आते तो उन पर रिक़्क़त त़ारी हो जाया करती थी चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उतबतुल ग़ुलाम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ जो कि बहुत बड़े वलियुल्लाह गुज़रे हैं, एक बार किसी मक़ाम से गुज़रे तो एक मकान के क़रीब खड़े हो गए, रिक़्क़त त़ारी होने के सबब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ पसीने से शराबोर थे। जब लोगों ने पूछा : ह़ुज़ूर ! यहां आप की येह ह़ालत कैसे हो गई ? फ़रमाने लगे : एक दौर में इस मकान में मुझ से कोई गुनाह हुवा था लिहाज़ा जब भी मैं यहां से गुज़रता हूं तो मुझे अपना वोह गुनाह शिद्दत से याद आता है और मुझे बहुत नदामत होती है इस वज्ह से यहां मेरी येह ह़ालत हुई।

(حلیۃ الاولیاء، 6/246، حدیث:8471ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! न जाने हम एक दिन में बल्कि एक घन्टे में बल्कि एक मिनट में कितने गुनाह कर डालते हैं मगर हमें उस का एह़सास नहीं होता क्यूंकि हमारा ज़मीर बिल्कुल मुर्दा हो चुका है। याद रखिये ! हमें **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश होना है, चाहे हम कितनी ही शानो शौकत वाले क्यूं न हों, चाहे हम कितनी ही बड़ी त़ाक़त के मालिक क्यूं न हों, चाहे हम कितने ही बड़े रईस और सर्मायादार क्यूं न हों, चाहे हम कितने ही बड़े ओहदेदार और कितने ही बड़े अफ़्सर क्यूं न हों, हमें **अल्लाह** पाक का येह इरशाद पेशे नज़र रखना होगा :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾
(پ 18، المؤمنون:115)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! येह बात यक़ीनी है कि सभी को **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश होना है, जो उस का इन्कार करेगा वोह मुसलमान नहीं रहेगा। न जाने गुनाह करते वक़्त हम येह क्यूं भूल जाते हैं कि हमें बारगाहे इलाही में पेश होना है। दुन्या में जब हम किसी बुज़ुर्ग से मुलाक़ात के लिये जाते हैं तो सर पर रूमाल या टोपी वग़ैरा रख लेते हैं, इसी त़रह़ सिगरेट पीते वक़्त अगर हम किसी बुज़ुर्ग को सामने से आता देख लें तो फ़ौरन सिगरेट छुपा लेते हैं या नीचे फेंक कर उसे जल्दी जल्दी पांव से मसल देते हैं, देखिये ! जब हम एक बुज़ुर्ग से इतनी शर्मो ह़या मह़सूस करते हैं तो **अल्लाह** पाक से शर्मो ह़या क्यूं नहीं करते कि जो "ज़ालिमुल ग़ैबे वश्शहादह" है यानी कोई शै उस से पोशीदा नहीं और उस ने हमें ज़ाहिरी और बात़िनी हर त़रह़ की बेह़याई से मना फ़रमाया है।

ऐ काश ! हमारा ज़मीर बेदार हो जाए और हमारा येह ज़ेहन बन जाए कि **अल्लाह** पाक देख रहा है। जब हमारी ऐसी सोच बन जाएगी कि **अल्लाह** पाक देख रहा है तो اِنۡ شَآءَاللہ हमारे अन्दर ज़रूर गुनाहों का एह़सास पैदा होगा, जब गुनाहों का एह़सास पैदा होगा तो اِنۡ شَآءَاللہ गुनाहों से बचने की सूरत भी बनेगी और जब गुनाहों से बचने की सूरत बनेगी तो اِنۡ شَآءَاللہ हमें ज़ाहिरी व बात़िनी दोनों त़रह़ की तरक़्क़ियां नसीब होंगी।

अल्लाह पाक हमें सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ की बरकतों से मालामाल फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाअ़ात, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मकतबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को बनिय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

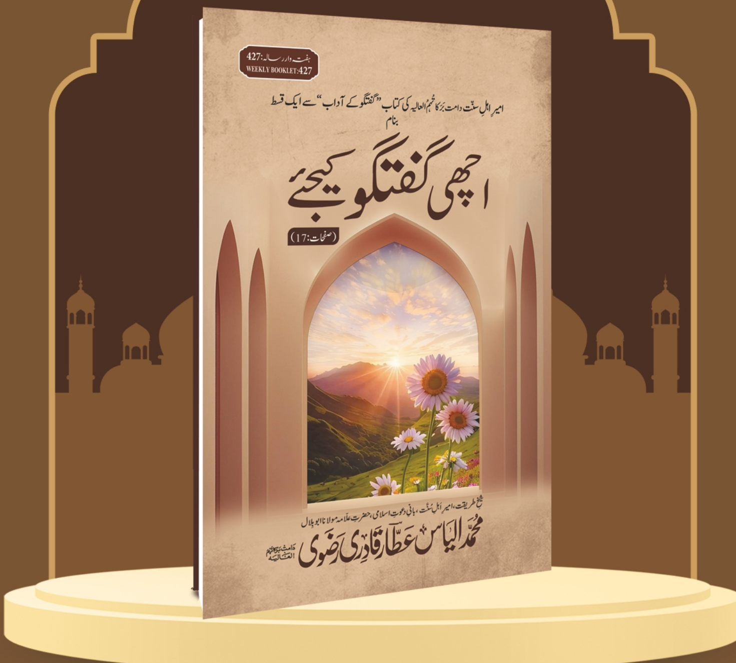

DAWATEISLAMI INDIA · FGN Channel Dekhte Rahiye · MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025